"उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षिक उपलब्धि"

चंद्र शेखर कुमार (शिक्षा), शिक्षा विभाग, अनुसंधानकर्ता, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)
डॉ. नीरज तिवारी (शिक्षा), सह – प्रोफेसर (शिक्षा विभाग), सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

सारांश

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि की जांच करना है। रैंडम सैंपलिंग तकनीक का उपयोग करते हुए, उच्च माध्यमिक स्तर से 321 छात्रों को शिक्षा की विभिन्न प्रणालियों, अर्थात् राज्य, मैट्रिक और केंद्रीय बोर्ड के स्कूलों में चुना जाता है। इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल (हाइड्स और अन्य, 2002) का उपयोग इमोशनल इंटेलिजेंस का आकलन करने के लिए किया गया है और विज्ञान में प्राप्त अंकों को उनके अर्धवार्षिक प्रदर्शन से लिया गया है। एकत्र किया गया डेटा सांख्यिकीय विश्लेषण के अधीन है, अर्थात्, माध्य, मानक विचलन, 'टी'- परीक्षण, 'एफ'- अनुपात, कार्ल पियर्सन के उत्पाद क्षण सहसंबंध गुणांक 'आर'। परिणाम छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धि और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक सकारात्मक महत्वपूर्ण संबंध दिखाते हैं। इसके अलावा, केंद्रीय बोर्ड के स्कूलों से संबंधित छात्रों में राज्य बोर्ड के छात्रों की तुलना में उच्च स्तर की भावनात्मक बुद्धि होती है, लेकिन उच्चतर माध्यमिक स्तर पर मैट्रिक बोर्ड के स्कूलों के छात्रों से भिन्न नहीं थे। इसी प्रकार, उच्च माध्यमिक स्तर पर राज्य और मैट्रिक बोर्ड के स्कूलों के छात्रों की तुलना में केंद्रीय बोर्ड के स्कूलों से संबंधित छात्रों ने शिक्षा में बेहतर प्रदर्शन किया है।

विशेष शब्द : *भावनात्मक बुद्धि, माध्य, मानक विचलन, 'टी'- परीक्षण, 'एफ'- अनुपात, कार्ल पियर्सन, उच्च माध्यमिक स्तर, डेटा सांख्यिकीय विश्लेषण, शैक्षणिक उपलब्धि*

1. परिचय

भावनात्मक बुद्धिमत्ता भावनाओं और उनके संबंधों के अर्थों को पहचानने और उनके आधार पर तर्क और समस्या को हल करने की क्षमता को संदर्भित करती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता भावनाओं को देखने, भावनाओं से संबंधित भावनाओं को आत्मसात करने, उन भावनाओं की जानकारी को समझने और उन्हें प्रबंधित करने की क्षमता में शामिल है। शोधकर्ताओं ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता के आयामों की जांच की 'भावनात्मक बुद्धि' शब्द के प्रयोग में आने से बहुत पहले सामाजिक कौशल, पारस्परिक क्षमता, मनोवैज्ञानिक परिपक्वता और भावनात्मक जागरूकता जैसी संबंधित अवधारणाओं को मापना। स्व विज्ञान पाठ्यक्रम के विकास और "सामाजिक विकास," "सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा," और "व्यक्तिगत बुद्धिमत्ता" जैसी कक्षाओं के शिक्षण के साथ, स्कूलों में शिक्षक 1978 से भावनात्मक बुद्धिमत्ता की मूलभूत शिक्षा दे रहे हैं। सामाजिक और भावनात्मक क्षमता के स्तर को ऊपर उठाना" (गोलेमैन, 1995)। सामाजिक वैज्ञानिक अभी अन्य घटनाओं के लिए भावनात्मक बुद्धि के संबंध को उजागर करना शुरू कर रहे हैं, उदाहरण के लिए, नेतृत्व (एशफोर्थ और हम्फ्री, 1995), समूह प्रदर्शन, व्यक्तिगत प्रदर्शन, पारस्परिक/ सामाजिक आदान-प्रदान, परिवर्तन का प्रबंधन और प्रदर्शन का मूल्यांकन करना (गोलेमैन, 1995)।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता भावनाओं के साथ वैध रूप से तर्क करने और विचारों को बढ़ाने के लिए भावनाओं का उपयोग करने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता में निम्नलिखित पाँच विशेषताएँ और क्षमताएँ शामिल हैं:

आत्म-जागरूकता – अपनी भावनाओं को जानना, भावनाओं को उनके होते ही पहचानना और उनके बीच भेदभाव करना।

मूड प्रबंधन – भावनाओं को संभालना ताकि वे वर्तमान स्थिति के लिए प्रासंगिक हों और आप उचित प्रतिक्रिया दें।

स्व-प्रेरणा – आत्म-संदेह, जड़ता और आवेग के बावजूद, अपनी भावनाओं को "इकट्ठा करना" और एक लक्ष्य की ओर खुद को निर्देशित करना।

सहानुभूति – दूसरों में भावनाओं को पहचानना और उनके मौखिक और अशाब्दिक संकेतों में ट्यूनिंग करना।

संबंधों का प्रबंधन – पारस्परिक संपर्क, संघर्ष समाधान और वार्ताओं को संभालना।

2 वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता

मस्तिष्क-आधारित शिक्षा में शोध से पता चलता है कि प्रभावी सीखने के लिए भावनात्मक स्वास्थ्य मौलिक है। नैशनल सेंटर फॉर क्लिनिकल इन्फैंट प्रोग्राम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, स्कूल में किसी छात्र की सफलता के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व सीखने की समझ यानी इमोशनल इंटेलिजेंस है। इस समझ के लिए प्रमुख तत्व आत्मविश्वास, जिज्ञासा, इरादे, आत्म-नियंत्रण, संबंधितता, संवाद करने की क्षमता और सहयोग करने की क्षमता हैं। ये लक्षण भावनात्मक बुद्धिमत्ता के सभी पहलू हैं। मूल रूप से, एक छात्र जो सीखना सीखता है वह सफल होने के लिए अधिक उपयुक्त होता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता ने GPA, IQ और मानकीकृत परीक्षण स्कोर जैसे पारंपरिक तरीकों की तुलना में भविष्य की सफलता का बेहतर भविष्यवक्ता साबित किया है। इसलिए, राष्ट्रव्यापी निगमों, विश्वविद्यालयों और स्कूलों की ओर से भावनात्मक बुद्धिमत्ता में बहुत रुचि है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विचार ने इन सभी सुविधाओं में अनुसंधान और पाठ्यक्रम विकास को प्रेरित किया है। शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला है कि जो लोग अपनी भावनाओं को अच्छी तरह से प्रबंधित करते हैं और दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से व्यवहार करते हैं, उनके संतुष्ट जीवन जीने की संभावना अधिक होती है। इसके अलावा, खुश रहने वाले लोग जानकारी को बनाए रखने के लिए अधिक उपयुक्त होते हैं और असंतुष्ट लोगों की तुलना में अधिक प्रभावी ढंग से ऐसा करते हैं।

किसी की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का निर्माण आजीवन प्रभाव डालता है। कई माता-पिता और शिक्षक, युवा स्कूली बच्चों में संघर्ष के बढ़ते स्तर से चिंतित हैं – कम आत्मसम्मान से लेकर शुरुआती नशीली दवाओं और शराब के उपयोग से लेकर अवसाद तक, छात्रों को भावनात्मक बुद्धिमत्ता के लिए आवश्यक कौशल सिखाने के लिए दौड़ रहे हैं। चूंकि भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक मास्टर योग्यता है, एक ऐसी क्षमता जो अन्य सभी क्षमताओं को गहराई से प्रभावित करती है, या तो उन्हें सुविधा प्रदान करती है या उनके साथ हस्तक्षेप करती है (गोलेमैन, 1995), छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि की जांच करने की आवश्यकता महसूस की जाती है।

3. संबंधित साहित्य की समीक्षा

विदेशों में किए गए अध्ययन

मेयर और सालोवी (1995) के अनुसार, भावनात्मक बुद्धि भावनाओं को समझने, भावनाओं तक पहुँचने और उत्पन्न करने की क्षमता है ताकि विचार की सहायता की जा सके, भावनाओं और भावनात्मक ज्ञान को समझा जा सके और भावनात्मक और बौद्धिक विकास को बढ़ावा देने के लिए भावनाओं को प्रतिबिंबित किया जा सके। उच्च उपलब्धि, प्रतिधारण और सकारात्मक व्यवहार को बनाए रखने के साथ-साथ जीवन की सफलता में सुधार के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभर रही है। तेजी से, स्कूल और शैक्षिक संगठन अकादमिक और सामाजिक दोनों परिणामों में सुधार के लिए एक प्रणालीगत समाधान की तलाश में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बदल रहे हैं। विदेशों में किए गए भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित अध्ययनों को यहां संकलित और प्रस्तुत किया गया है।

फारूक (2003) ने 246 किशोर छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर भावनात्मक बुद्धि के प्रभाव की जांच की और पाया कि उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले छात्र कम भावनात्मक बुद्धि वाले छात्रों की तुलना में बेहतर अकादमिक प्रदर्शन दिखाते हैं।

ड्रैगो (2004) ने गैर-पारंपरिक कॉलेज के छात्रों में भावनात्मक बुद्धि और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों की जांच की। चूंकि छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमता में अंतर था, कुछ छात्रों को दूसरों की तुलना में कॉलेजिएट पर्यावरण के लिए बेहतर तैयार किया गया था, शैक्षणिक

उपलब्धि में भावनात्मक बुद्धि की भूमिका को बेहतर ढंग से समझा जाना चाहिए। भावनात्मक बुद्धि जैसे गैर-संज्ञानात्मक कारक छात्र की संज्ञानात्मक क्षमता को पूरक या बढ़ा सकते हैं। इस अध्ययन में, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, उपलब्धि प्रेरणा, चिंता और संज्ञानात्मक क्षमता पूर्वसूचक चर थे। छात्र GPA द्वारा मापी गई कसौटी चर शैक्षणिक उपलब्धि थी। परिणामों ने प्रदर्शित किया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता छात्र जीपीए स्कोर, छात्र संज्ञानात्मक क्षमता स्कोर और छात्र की उम्र से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित है।

पार्कर और अन्य (2005) ने हाई स्कूल से विश्वविद्यालय में सफल संक्रमण पर भावनात्मक बुद्धि के प्रभाव की जांच की। परिणामों से पता चला कि अकादमिक रूप से सफल छात्रों में कई अलग-अलग भावनात्मक और सामाजिक दक्षताओं के उच्च स्तर थे। इन निष्कर्षों से पता चलता है कि हाई स्कूल से विश्वविद्यालय तक के सफल परिवर्तन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मेस्त्रे और अन्य (2006) ने 127 स्पेनिश किशोरों के नमूने में जांच की, भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता, भावनात्मक खुफिया (एमएससीईआईटी) के प्रदर्शन माप द्वारा मूल्यांकन किया गया, दोनों पुरुषों और दोनों के लिए शैक्षणिक उपलब्धि और अनुकूलन के शिक्षक रेटिंग के साथ सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध महिलाओं। लड़कियों के बीच, इन भावनात्मक क्षमताओं का सहकर्मी मित्रता नामांकन के साथ भी सकारात्मक संबंध है। IQ और बिग फाइव व्यक्तित्व लक्षणों को नियंत्रित करने के बाद, भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता लड़कों के बीच शैक्षणिक अनुकूलन की शिक्षक रेटिंग और लड़कियों के बीच मित्रता नामांकन के साथ महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी रही। स्व-कथित भावनात्मक बुद्धिमत्ता इन मानदंडों से संबंधित नहीं थी। इन निष्कर्षों ने परिकल्पना के लिए आंशिक समर्थन प्रदान किया कि भावनात्मक क्षमताएं स्कूल के लिए सामाजिक और शैक्षणिक अनुकूलन के संकेतकों से जुड़ी हैं।

हसन और अन्य (2009) द्वारा किए गए अध्ययन में 223 फॉर्म 1 और फॉर्म 4 छात्रों का एक नमूना शामिल था। डेटा संग्रह की प्रक्रिया को प्रश्नावली के एक सेट का उपयोग करके प्रशासित किया गया था जिसमें शुट्टे सेल्फ-रिपोर्ट ऑफ़ इमोशनल इंटेलिजेंस (एसएसआरआई) और बेक एंग्ज़ाइटी इन्वेंटरी (बीएआई) से अनुकूलित भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक स्व-रिपोर्ट माप शामिल है। टी-टेस्ट विश्लेषण ने दिखाया कि 13 और 16 वर्ष की आयु के सभी छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धि स्तर के लिए कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं थे। हालांकि, आयु के अनुसार महिला छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धि स्तर के लिए महत्वपूर्ण अंतर थे। परिणामों से पता चला कि दोनों लिंगों के बीच सभी छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धि स्तर के लिए महत्वपूर्ण अंतर थे। छात्राओं में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का औसत स्कोर छात्रों की तुलना में अधिक पाया गया। पियर्सन सहसंबंध विश्लेषण से पता चला कि चिंता स्तर के संबंध में सभी छात्रों के भावनात्मक खुफिया स्तर नकारात्मक रूप से महत्वपूर्ण थे। छात्रों की आयु और लिंग सहित सभी चरों की शैक्षणिक उपलब्धि के साथ सहसंबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता भी सकारात्मक रूप से महत्वपूर्ण थी।

तमन्नाफर और अन्य (2010) ने शैक्षणिक उपलब्धि के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-अवधारणा और आत्मसम्मान के बीच संबंधों का पता लगाने के लिए कशान विश्वविद्यालय में 6,050 छात्रों पर एक अध्ययन किया। नमूने के रूप में छात्रों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था। अध्ययन में यह पाया गया कि छात्रों की भावनात्मक बुद्धि, आत्म अवधारणा और सम्मान, उनकी शैक्षणिक उपलब्धि से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित पाया गया।

याहया और अन्य (2011) द्वारा किए गए अध्ययन ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता के पहचाने गए पांच आयामों, अर्थात् आत्म-जागरूकता, भावनात्मक प्रबंधन, आत्म-प्रेरणा, सहानुभूति, पारस्परिक कौशल और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंधों की जांच की। इस अध्ययन का उद्देश्य यह पहचान करना था कि भावनात्मक बुद्धि के पांच आयाम अकादमिक प्रदर्शन में योगदान करने में सक्षम हैं या नहीं। डेटा का विश्लेषण करने के लिए पियर्सन-आर और कई प्रतिगमन

के सांख्यिकीय अनुमान का उपयोग किया गया था। परिणामों से पता चला कि शैक्षिक प्रदर्शन के साथ p <0.05 के स्तर पर आत्म-जागरूकता (r = 0.21), भावनात्मक प्रबंधन (r = 0.21) और समानुभूति (r = 0.21) के बीच महत्वपूर्ण संबंध। मल्टीपल रिग्रेशन एनालिसिस (स्टेप वाइज) से प्राप्त निष्कर्षों से पता चला है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता के केवल तीन आयाम हैं जो आत्म-जागरूकता (ß = 0261), आत्म प्रेरणा (ß = - 0182) और समानुभूति (ß = 0167) मानदंड में भिन्नता के 8.7% के लिए जिम्मेदार हैं। (अकादमिक प्रदर्शन)। शोध ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक प्रदर्शन के आयामों के बीच संबंध को दर्शाने के लिए डिज़ाइन किया गया एक मॉडल भी प्रस्तुत किया।

भारत में किए गए अध्ययन

भावनात्मक बुद्धिमत्ता निर्माण में महत्वपूर्ण नैदानिक और उपचारात्मक निहितार्थ हैं क्योंकि यह अनुसंधान निष्कर्षों के एक समामेलन से उभरा है कि लोग कैसे भावनाओं का मूल्यांकन, संचार और उपयोग करते हैं (मालेकारी और मोहंती, 2011)। Zeidner और अन्य (2004) ने सही ढंग से बताया कि शैक्षिक सफलता पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव को पूरी तरह से समझने के लिए पर्याप्त शोध नहीं किया गया है। उपरोक्त विचारों के अनुरूप भारतीय संदर्भ में कुछ अध्ययन किए गए हैं।

कट्टेकर (2010) ने कर्नाटक राज्य में 500 कक्षा IX के छात्रों की कन्नड़ भाषा में शैक्षणिक उपलब्धि पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव की जांच के लिए एक अध्ययन किया। उन्होंने छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध पाया।

बाई (2011) द्वारा किए गए अध्ययन का उद्देश्य पूर्व-विश्वविद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में चिंता की प्रवृत्ति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता की जांच करना है। परीक्षा में एक खोजपूर्ण छात्र प्रदर्शन होने के कारण अध्ययन पर गंभीरता से विचार किया गया है ताकि यह जांच की जा सके कि उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर चिंता की प्रवृत्ति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का कोई प्रभाव है या नहीं। अध्ययन में बैंगलोर शहरी और ग्रामीण क्षेत्र से चुने गए 500 प्री-यूनिवर्सिटी के छात्र शामिल थे जो स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण प्रक्रिया का उपयोग करके विज्ञान, कला और वाणिज्य स्ट्रीम में पढ़ रहे थे। अध्ययन से पता चला कि, पीयूसी के कला, विज्ञान और वाणिज्य के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, चिंता प्रवणता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण अंतर है और इसके आयाम पीयूसी के कला और विज्ञान में चिंता की प्रवृत्ति और भावनात्मक बुद्धि में महत्वपूर्ण अंतर है। पीयूसी के वाणिज्य और विज्ञान के छात्रों में चिंता की प्रवृत्ति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण अंतर है।

4. अनुसंधान समस्या का विवरण

एक शोध अध्ययन को विकसित करने के लिए छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि पर संबंधित साहित्य की विस्तृत समीक्षा की गई है। शोध के लिए समस्या निम्नलिखित शोध प्रश्नों पर आधारित थी:

(i) क्या सांवेगिक बुद्धि का शैक्षणिक निष्पादन पर प्रभाव पड़ता है?

(ii) क्या विद्यालयों की विभिन्न श्रेणियों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय रूप से भिन्नता है?

उत्पन्न प्रश्नों के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों का बहिर्गमन किया गया:

उच्च माध्यमिक स्तर पर राज्य, मैट्रिक और केंद्रीय बोर्ड के स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर है या नहीं, इसकी जांच करना और उच्च माध्यमिक स्तर पर राज्य, मैट्रिक और केंद्रीय बोर्ड के स्कूलों में छात्रों के बीच चयनित चर के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध है या नहीं, इसकी जांच करना।

इस प्रकार, समस्या को इस प्रकार कहा गया है: उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और अकादमिक उपलब्धि।

5. पद्धति

जनसंख्या और नमूना लक्षण

वर्तमान अध्ययन के लिए लक्षित आबादी उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की विभिन्न प्रणालियों का पालन करने वाले स्कूलों की विभिन्न श्रेणियों के छात्र हैं। लक्षित आबादी से 321 छात्रों (106 राज्य, 110, मैट्रिक और 105 केंद्रीय बोर्ड के छात्रों) का एक नमूना चुना जाता है।

यंत्र

उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की विभिन्न प्रणालियों में छात्रों की आत्म-अवधारणा का विश्लेषण करने के लिए वर्तमान अध्ययन के लिए उपयोग किया जाने वाला शोध उपकरण इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल (हाइड्स और अन्य, 2002) है और शैक्षणिक उपलब्धि के लिए सभी विषयों में उपलब्धि ली गई है।

6.परिणामों का विश्लेषण और व्याख्या

तालिका-1: उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों के बीच चयनित चरों के बीच सहसंबंध का विश्लेषण

चर	भावात्मक बुद्धि	शैक्षिक उपलब्धि
भावात्मक बुद्धि	1	0.25 **
शैक्षिक उपलब्धि		1

**0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण

उपरोक्त तालिका (तालिका-1) से यह स्पष्ट है कि वर्तमान अध्ययन के चुनिंदा चर, अर्थात्, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि सभी एक दूसरे के साथ सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध हैं और 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण हैं।

तालिका-2: उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों की विभिन्न श्रेणियों में छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के अंतर का विश्लेषण

चर	विविधता का स्रोत	*df*	वर्ग का योग	वर्ग के योग का मीन	*F*-अनुपात
भावात्मक बुद्धि	समूहों के बीच	2	409001.85	204500.92	941.79**
	समूहों के भीतर	318	69050.46	217.140	
	कुल	320	478052.35		
शैक्षिक उपलब्धि	समूहों के बीच	2	2048.55	1024.28	4.94**

***0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण*

तालिका-2 में भिन्नता के विश्लेषण के लिए स्कूलों की विभिन्न श्रेणियों को अलग-अलग समूहों के रूप में माना गया है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के लिए एफ-अनुपात क्रमशः 941.79 और 4.94 हैं, जो 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार, उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों की विभिन्न श्रेणियों के छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर है।

विभिन्न श्रेणियों के स्कूलों, जैसे राज्य, मैट्रिक और केंद्रीय बोर्ड के स्कूलों से संबंधित छात्रों के बीच अंतर की वास्तविक डिग्री स्थापित करने के लिए, महत्वपूर्ण अनुपातों की गणना की गई और औसत अंकों के बीच वास्तविक अंतर स्थापित किया गया। इस प्रकार नीचे दी गई तालिकाएँ उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों की विभिन्न श्रेणियों के विद्यार्थियों के बीच माध्य अंतर दर्शाती हैं।

चर	स्कूलों की श्रेणी	नमूना – आकार	मीन	SD	SEM	SED	CR
भावात्मक बुद्धि चर	राज्य बोर्ड	106	62.80	15.61	1.52	2.04	21.52**
	मैट्रिकुलेशन बोर्ड	110	106.78	14.42	1.38		
	राज्य बोर्ड	106	62.80	15.61	1.52	2.05	42.93**
	केंद्रीय बोर्ड	105	150.86	14.14	1.38		
	मैट्रिकुलेशन बोर्ड	110	106.78	14.42	1.38	1.95	22.62**
	केंद्रीय बोर्ड	105	150.86	14.14	1.38		
शैक्षिक उपलब्धि	राज्य बोर्ड	106	59.58	13.74	1.33	1.92	1.97*
	मैट्रिकुलेशन बोर्ड	110	63.35	14.47	1.38		
	राज्य बोर्ड	106	59.58	13.74	1.33	1.98	3.12**
	केंद्रीय बोर्ड	105	65.75	14.96	1.46		
	मैट्रिकुलेशन बोर्ड	110	63.35	14.47	1.38	2.01	1.20^{NS}

**0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण*

तालिका–3 में यह स्पष्ट है कि राज्य बोर्ड के स्कूली छात्रों की तुलना में मैट्रिक स्कूल के छात्र अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता में बेहतर हैं; राज्य बोर्ड स्कूल के छात्रों की तुलना में केंद्रीय बोर्ड स्कूल के छात्र अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता में बेहतर हैं; उच्च माध्यमिक स्तर पर मैट्रिक बोर्ड के छात्रों की तुलना में केंद्रीय बोर्ड स्कूल के छात्रों की भावनात्मक बुद्धि बेहतर होती है। उपरोक्त तालिका (तालिका–3) में यह भी देखा गया है कि मैट्रिक स्कूल के छात्र राज्य बोर्ड स्कूल के छात्रों की तुलना में अपनी शैक्षणिक उपलब्धि में बेहतर हैं; राज्य बोर्ड के छात्रों की तुलना में केंद्रीय बोर्ड स्कूल के छात्र अपनी शैक्षणिक उपलब्धि में बेहतर हैं; उच्च माध्यमिक स्तर पर मैट्रिक बोर्ड के छात्रों की तुलना में केंद्रीय बोर्ड स्कूल के छात्र अपनी शैक्षणिक उपलब्धि में समान हैं।

7. सारांश और निष्कर्ष

हम एक नई सदी की शुरुआत में हैं, और बुद्धिमता और सफलता को उस तरह से नहीं देखा जाता जैसा पहले देखा जाता था। बुद्धि के नए सिद्धांत पेश किए गए हैं और धीरे–धीरे पारंपरिक सिद्धांत की जगह ले रहे हैं। पूरा बच्चा/छात्र चिंता का केंद्र बन गया है, न केवल उसकी तर्क क्षमता, बल्कि उसकी रचनात्मकता, भावनाएं और पारस्परिक कौशल भी। मल्टीपल इंटेलिजेंस थ्योरी को गार्डनर (1983) और इमोशनल इंटेलिजेंस थ्योरी को मेयर और सलोवी (1990) फिर गोलेमैन (1995) द्वारा पेश किया गया है। केवल बुद्धिमत्ता ही सफलता का एकमात्र पैमाना नहीं है, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक बुद्धिमत्ता और भाग्य भी किसी व्यक्ति की सफलता में बड़ी भूमिका निभाते हैं (गोलेमैन, 1995)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता हमारी अपनी और दूसरों की भावनाओं और भावनाओं की निगरानी करने, उनके बीच भेदभाव करने और हमारी सोच और कार्यों को निर्देशित करने के लिए इसका उपयोग करने में सक्षम हो रही है (सलोवी और मेयर, 1990)। भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति चार क्षेत्रों में कुशल होता है, भावनाओं को पहचानना, उपयोग करना, समझना और नियंत्रित करना (मेयर और सालोवी, 1993)। चूंकि भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक मास्टर योग्यता है, एक ऐसी क्षमता जो अन्य सभी क्षमताओं को गहराई से प्रभावित करती है, या तो उन्हें सुविधा प्रदान करती है या उनके साथ हस्तक्षेप करती है (गोलेमैन, 1985), छात्रों के बीच

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि की जांच करने की आवश्यकता महसूस की जाती है।

वर्तमान जांच में यह पाया गया है कि शिक्षा की विभिन्न प्रणालियों, अर्थात् राज्य, मैट्रिक और केंद्रीय बोर्ड के स्कूलों के विभिन्न श्रेणियों के स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों को भावनात्मक बुद्धि और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में महत्वपूर्ण रूप से भिन्न पाया गया है। उच्च माध्यमिक स्तर पर राज्य और मैट्रिक बोर्ड के स्कूलों में अपने समकक्षों की तुलना में केंद्रीय बोर्ड के छात्र अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि में काफी बेहतर हैं। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर मैट्रिकुलेशन बोर्ड के छात्र राज्य बोर्ड के स्कूलों में अपने समकक्षों की तुलना में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि में काफी बेहतर हैं, लेकिन राज्य बोर्ड के स्कूलों के छात्रों की तुलना में काफी कम हैं। मैट्रिकुलेशन और केंद्रीय बोर्ड के स्कूलों में उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों के पास स्कूलों में बेहतर बुनियादी सुविधाएं हैं, जैसे अच्छी तरह से सुसज्जित प्रयोगशालाएं, पर्याप्त पुस्तकालय सुविधाएं संसाधन केंद्र, खेल उपकरण और उनका पाठ्यक्रम भी एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण है जिसके लिए भाग से कुल प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। शिक्षकों और प्रबंधन की। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर राज्य बोर्ड के स्कूलों में उनके समकक्षों की तुलना में मैट्रिक और केंद्रीय बोर्ड दोनों स्कूलों में छात्रों के लिए माता-पिता, घर पर सुविधाओं और घर के वातावरण से विस्तारित समर्थन बहुत अनुकूल है। इन कारकों ने मैट्रिक और केंद्रीय बोर्ड स्कूल के छात्रों में भावनात्मक बुद्धि और शैक्षणिक उपलब्धि के बेहतर विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संदर्भ सूची

- एशफोर्थ, बी.ई. और हम्फ्री, आर.एच. (1995)। कार्यस्थल में भावना: एक पुनर्मूल्यांकन। ह्यूमन रिलेशंस, 48(2): 97-125.
- बाई, एस। (2011)। पूर्व-विश्वविद्यालय के छात्रों की अकादमिक उपलब्धि के संबंध में चिंता की प्रवृत्ति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन। अनुसंधान विश्लेषण और मूल्यांकन, 2(22): 1-5।
- ड्रैगो, जेएम (2004)। गैर-परंपरागत कॉलेज के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और अकादमिक उपलब्धि के बीच संबंध, अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस, वाल्डेन विश्वविद्यालय।
- फारूक, ए. (2003). अकादमिक प्रदर्शन, अप्रकाशित थीसिस, क्लिनिकल मनोविज्ञान संस्थान, कराची विश्वविद्यालय, पाकिस्तान पर भावनात्मक खुफिया का प्रभाव।
- गार्डनर, एच। (1983)। फ्रेम्स ऑफ माइंड, न्यूयॉर्क, बेसिक बुक्स। गार्डनर, एच। (1993)। मल्टीपल इंटेलिजेंस, न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स।
- गोलेमैन, डी। (1995)। इमोशनल इंटेलिजेंस, न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स।
- हसन, ए., सुलेमान, टी. और इशाक, आर. (2009)। दर्शनशास्त्र ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की जिज्ञासा के स्तर और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को रेखांकित करता है। जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 5(2): 95-103।
- हाइड, ए., पेठे, एस. और धर, यू. (2002)। इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल, वेदांत प्रकाशन, लखनऊ।
- कट्टेकर, एस.एस. (2010)। कन्नड़ भाषा में अकादमिक उपलब्धि पर खुफिया भागफल और भावनात्मक भागफल का तुलनात्मक अध्ययन। अनुसंधान विश्लेषण और मूल्यांकन, 1(5): 43-44।
- मालेकरी, एस. और मोहंती, आर.पी. (2011)। इंडियन प्रोफेशनल कॉलेज के छात्रों के लिए एक भावनात्मक खुफिया रडार का निर्माण। शिक्षा में वैज्ञानिक अनुसंधान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 4(2): 115-130।

- मेयर, जे.डी. और सालोवी, पी. (1993)। भावनात्मक खुफिया की खुफिया। इंटेलिजेंस, 17(4): 433- 442.
- मेयर, जे.डी. और सालोवी, पी. (1995)। इमोशनल इंटेलिजेंस एंड द कंस्ट्रक्शन एंड रेगुलेशन ऑफ फीलिंग्स। एप्लाइड एंड प्रिवेंटिव साइकोलॉजी, 4(3): 197-208।
- मेस्क्वे, जे.एम., गिल, आर., लोप्स, पी.एन., सालोवी, पी. और गिल-ओलार्टे, पी. (2006)। स्कूल के लिए भावनात्मक बुद्धि और सामाजिक और शैक्षणिक अनुकूलन। साइकोथेमा, 18: 112-117
- पार्कर, जेडीए, डफी, जेएम, वुड, एलएम, बॉन्ड, बीजे और होगन, एमजे (2005)। अकादमिक उपलब्धि और भावनात्मक बुद्धिमत्ता: हाई स्कूल से विश्वविद्यालय में सफल संक्रमण की भविष्यवाणी करना। जर्नल ऑफ़ द फ़र्स्ट ईयर एक्सपीरियंस एंड स्टूडेंट्स इन ट्रांज़िशन, 17(1): 67-78.
- सालोवी, पी. और मेयर, जे.डी. (1990)। भावात्मक बुद्धि। कल्पना, अनुभूति और व्यक्तित्व, 9: 185-211।
- तमन्नाफर, एम.आर., सेदिघी अरफाई, एफ. और सलामी मोहम्मदाबादी, एफ. (2010)। अकादमिक उपलब्धि के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-अवधारणा और आत्म-सम्मान के बीच संबंध। शैक्षिक रणनीतियों का ईरानी जर्नल, 3(3): 121-126।
- याहया, ए., ईई, एनएस, बाचोक, जे.डी.जे., याहया, एन., बॉन, ए.टी. और इस्माइल, एस (2011)। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और अकादमिक प्रदर्शन के आयामों का संबंध। अमृत मनोविज्ञान, 41: 5821-5826।
- ज़ेडनर, एम।, मैथ्यूज, जी। और रॉबर्ट्स, आर.डी. (2004)। कार्यस्थल में भावनात्मक बुद्धिमत्ता: एक गंभीर समीक्षा। अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान: एक अंतरराष्ट्रीय समीक्षा, 53: 371-399।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY